[साहित्य संहिता](http://sahityasamhita.org/)

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 2
February 2016

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा का संजाल

डा॰ किरण ग्रोवर

एसो.प्रो.,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ,डी. ए. वी. कालेज, अबोहर।

kirangrover@davcollegeabohar.com, groverkirank@gmail.com

इंटरनैट कम्प्यूटर तंत्र का विश्वव्यापी जाल है, समाजशास्त्री गिड ने कहा है कि इंटरनैट ने प्रतिदिन के जीवन में ग्लोबल और लोकल की सीमाओं को समाप्त करके अन्तःक्रिया और सम्प्रेषण का नया चैनल प्रदान किया है। कम्प्यूटर तंत्र के विश्वव्यापी जाल इंटरनैट का आरम्भ 1969 में अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग ARPA (Advanced research projects Agency) के शोध कार्य के परिणाम स्वरूप हुआ। इंटरनैट एक ऐसा माध्यम बन चुका है जिसने भौगोलिक दूरियों को कम कर दिया है ऐसा प्रतीत होता है कि दुनिया सिमट गई है। इंटरनैट आधुनिक युग का महत्त्वपूर्ण बहुद्देशीय जनसंचार माध्यम है। इंटरनैट पर जनसंचार के सभी माध्यमों की उपलब्धता सरलता से हो जाती है। इंटरनैट पर प्रमुख समाचार पत्र पत्रिकाओं की उपलब्धता सहजता के साथ होने लगी है। दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम को इंटरनैट पर देखा व सुना जा सकता है। भारत में इंटरनैट उपभोक्ताओं की संख्या दस करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी है। इससे भारत एशिया का दूसरे नम्बर का इंटरनैट उपभोक्ता बन चुका है। अभी तक जनसंचार के इस माध्यम पर अंग्रेज़ी भाषा का ही प्रभुत्त्व था परन्तु अब अंग्रेज़ी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को भी यथोचित स्थान मिल रहा है। अंग्रेजी के बाद चीनी भाषा सिर्फ चीन तक ही सीमित है जबकि हिन्दी जानने वालों की संख्या विश्व भर में अधिक है। एशिया,यूरोप तथा अन्य भू-भाग में इंटरनैट माध्यम पर अंग्रेज़ी के बाद दूसरा स्थान हिन्दी का है। कम्प्यूटर में नागरी लिपि तथा अन्य भारतीय लिपियों के प्रयोग की दिशा में जिस्ट प्रौद्योगिकी ने क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया। जिस्ट शैल साफ्टवेयर जो एम॰एस॰डास॰ अनुप्रयोग पर आधारित पाठ्य सामग्री की प्रविष्टि, भंडारण, प्रदर्शन तथा भारतीय भाषाओं को अ्ग्रेज़ी के साथ साथ मुद्रण के लिए संभव बनाता है। जिस्ट शैल भारतीय भाषाओं के साथ कार्य करने में आंकड़ा संसाधन (डाटा प्रोसैसिंग) अनुप्रयोग के कलए आपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। राजभाषा हिन्दी को सूचना क्रान्ति से अधिकाधिक लाभ उठाने के लिए अनेक साफ्टवेयर विकसित हुए हैं। द्विभाषिक शब्द संसाधकों में पृथक् पृथक् सुविधाएँ उपलब्ध हैं-

1 देवनागरी सी-बेसिक कंपाइलर

2 द्विभाषिक डाटाबेस-देवबेस

3 ए॰पी॰सी॰ कारपोरेट

4 फैक्ट -एकांउटिंग के लिए

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 2
February 2016

5 रूपा-विज्ञापन के लिए

6 सुलिपि-डीबेस, लोट्स,वर्डस्टार, सॉफ्टबेस।

7 आकृति विन्डोज़ का अंतरापृष्ठ।

8 बैकिंग सेवा के लिए बहुभाषिक सिंगल विण्डो सॉफ्टवेयर।

9 श्री लिपि विण्डोज़।

10 प्रकाशक।

11 अक्षर विण्डोज़।

12 लीप आॅफिस।

हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विकसित करने में इंटरनैट माध्यम का योगदान अप्रतिम सिद्ध हो रहा है। इंटरनैट माध्यम पर हिन्दी कार्यक्रम की स्थिति में निरन्तर सुदृढ़ता दृष्टिगत हो रही है। मंगल, सरल, अपराजिता,अर्जुन, गणेश, शिवाजी,नारद, चाणक्य, आकृति, सूर्या, वाणी आदि प्रमुख देवनागरी लिपि के मुख्य चिह्न माने जाते हैं। बढ़ते बाज़ार तंत्र और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पाद हेतु अनुकूल वातावरण के लिए हिन्दी भाषा को अपनाया जा रहा है। अपनी भाषा में अपनी बात कहने का सिद्धान्त हिन्दी के प्रचार प्रसार का आधार साबित हो रहा है।

कम्प्यूटर और इंटरनैट के संसार में हिन्दी को लाने हेतु इंडिक्स नैटलैब्स ने 'रफ्तार डॉट कॉम' का ईजाद किया जोकि हिन्दी का प्रथम सर्च इंजन माना जाता हैं। इंडिक्स ने पंचायती राज पर शोध करते हुए पाया कि ग्राम पंचायत को कम्प्यूटर और इंटरनैट की सुविधा उपलब्ध कराये जाने के बावजूद ई-गवर्नैंस की अवधारणा इसलिए असफल रही कि कम्प्यूटर और इंटरनैट का कार्य अंग्रेज़ी में संचालित था इसलिए उन्होंने हिन्दी में सर्च इंजन ईजाद करने की आवश्यकता अनुभूत की। इंडिक्स नैटलैब्स के लवेश भंडारी,पीयूष तथा श्रीनिवास ने रफ्तार सर्च इंजन को विकसित किया। उन्होंने स्वीकारा कि हमने उपभोक्ताओं की जरूरतों और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी में सर्च इंजन बनाया है जो अंग्रेज़ी सर्च इंजन का हिन्दी संस्करण नहीं है वरन् जो हम हिन्दी में सोचते हैं उसी के अनुसार सर्च इंजन बना है। तब से इंटरनैट पर हिन्दी कार्यंक्रमों का तंत्र सशक्तिकरण की ओर बढ़ने लगा। सी॰डेक॰ पुणे ने हिन्दी सीखने के लिए मल्टी मीडिया उपयोगी सोफ्टवेयर पैकेज तैयार किये हैं-लीला हिन्दी स्वयं शिक्षक तथा हिन्दी प्रबोध। इन दोनों कार्यंक्रमों में कार्ड की सहायता से पाठ व शब्द का उच्चारण सुनने ,अपनी आवाज़ टेप करने व विस्तृत अभ्यास करने की सुविधा उपलब्ध है। विभिन्न संस्थानों द्वारा तैयार कर संस्थागत गतिविधियों के कार्यंक्रम इंटरनैट पर डाले जा रहे हैं। हिन्दी भाषा व साहित्य की सामग्री इंटरनैट माध्यम पर सरलता से उपलब्ध होने लगी है। इंटरनैट का

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 2
February 2016

विश्वव्यापी हिन्दी ब्लॉग तंत्र बहुत प्रभावी बनता जा रहा है। इंटरनैट माध्यम पर चैटिंग कार्यक्रम भी पर्याप्त लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं। अहिन्दी भाषियों को हिन्दी सीखाने और हिन्दी को अधिक सशक्त बनाने के लिए इंटरनैट पर कई कार्यक्रमों का निर्माण किया गया है। इंटरनैट माध्यम शैक्षिणक दृष्टि से भी उपयोगी सिद्ध हुआ है। विश्व की शिक्षण संस्थाएं दूरस्थ शिक्षण प्रदान करने हेतु इंटरनैट प्रौद्योगिकी का आश्रय ले रही हैं। इंटरनैट माध्यम पर विषय विशेषज्ञ द्वारा पाठ्यंक्रम के आधार पर व्याख्यान प्रस्तुत किया जाता है। इंटरनैट के माध्यम से छात्र वर्ग शैक्षिणक गतिविधियों में अपनी सहभागिता दर्शा सकता है। भारतीय प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा हिन्दी भाषा शिक्षण के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से कई वैबसाइटों का निर्माण हिन्दी में किया गया है जिससे राष्ट्रीय स्तर पर छात्र व शिक्षण को सहायता मिल सके। शैक्षिणक गतिविधियों से सम्बन्धित हिन्दी वैबसाइटों की सूची इस प्रकार है-

1 एन॰सी॰आर॰टी॰ किताबें (http://www.ncert.nic.in)
2 हिन्दी विकिपीडिया (http://hi.wikipedia.com)
3 हिन्दी पुस्तकें (http://www.pustak.org)
4 सरल हिन्दी (http://www.saralhindi.com)
5 पुस्तक संग्रह (http://books.hinkhoj.com)
6 स्वास्थ्य संसार (http://www.traditionalmedicine.agoodplace4all.co
7 तकनीक ॰कॉम (http://takneek.com)
8 कैरियर दिशा (http://www.careerdisha.org)
9 इन्दिरा गांधी यूनिवर्सिटी (http://www.ignou.ac.in/webhindi/index.htm)
10 संस्कारों की पतवार (http://praveensahu.webs.com)
11 आइ॰आइ॰टी॰ कानपुर हिन्दी (http://w)ww.litk.ac.in/hindi)
12 न्यू उड़ान (http://www.newudaan.blogspot.com)
13 विधि शास्त्र अभिलाषी (http://www.lawentrance.com/hi/)
14 इग्नू (http://hindi.ignou.ac.in)
15 झरोखा आइ॰आइ॰टी॰ खडगपुर (http://www.mymail.litkgp.ernet.in/jharokha)

प्रस्तुत वैबसाइटों के माध्यम से हिन्दी भाषा द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। अहिन्दी भाषी इन वैबसाइटों से शिक्षा प्राप्त कर हिन्दी की प्रयुक्तियों से परिचित होते हैं। शिक्षा के प्रचार प्रसार की आधुनिक तकनीक हिन्दी को वैश्विक धरातल पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है। भारतीय परिदृश्य में साइबर शिक्षा का प्रभावशाली माध्यम हिन्दी को माना जा रहा है। इन्टैल,एच ॰सी ॰एल॰,ऐपल, माइक्रोसोफ्ट आदि सूचना प्रौद्योगिकी से जुडे संस्थान भी साइबर शिक्षा के प्रति छात्रों को आकर्षित करने के लिए कई परियोजनाएँ तैयार कर रहे हैं। हिन्दी

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 2
February 2016

वैबसाइटों का संजाल न केवल ज्ञान विज्ञान के विषय तक सीमित है अपितु कला, धर्म व संस्कृति से सम्बन्धित जानकारी वैबसाइटों पर उपलब्ध हो रही है। हिन्दी वैबसाइट सिर्फ संस्थाओं द्वारा ही निर्मित नहीं हो रही बल्कि स्वयंसेवी संगठन, सामाजिक संगठन, व्यक्तिगत स्तर पर भी अबाध गति से निर्मित हो रही हैं। हिन्दी की वैबसाइटें दर्शाती हैं कि उपभोक्ताओं के बीच हिन्दी कार्यक्रमों की लोकप्रियता बढ़ रही है। हिन्दी भाषा और साहित्य की जानकारी जिन वैबसाइटों पर उपलब्ध हैं उनका उल्लेख इस प्रकार हैः-

1 www.rajbhasha.com

इस वैबसाइट पर राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित नियम, साहित्य, व्याकरण, शब्दकोश आदि की जानकारी तो मिलती है ही हिन्दी पत्रकारिता, तकनीकी सेवाएँ ,हिन्दी शिक्षा, हिन्दी संचार आदि की भी जानकारी उपलब्ध होती है।

2 www.rajbhasha.nic.in

इस वैबसाइट पर हिन्दी सीखने के लिए प्रज्ञा,प्रवीण व प्रबोध पैकेज भी उपलब्ध है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय की साइट पर राजभाषा सम्बन्धी नियम, अधिनियम, तिमाही व अर्द्धवार्षिक कार्यक्रम व विवरण की महत्वपूर्ण जानकारी दी जाती है।

3 www.indianlanguages.com

इस वैबसाइट पर प्रमुख भारतीय भाषाओं के साथ साथ हिन्दी का साहित्य, समाचार, ई-मेल, सर्च-इंजन आदि की सूचनाएँ मिलती हैं।

4 www.tdil.mit.gov.in

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा संचालित इस वैबसाइट पर राजभाषा के अनुसंधानरत संघटनाओं की जानकारी के साथ साथ आॅनलाइन अनुवाद सेवा भी उपलब्ध है तथा इलैक्ट्रानिक पत्रिका 'विश्व भारत' भी पढ़ने हेतु प्राप्य है।

5 www.dictionary.com

इस वैबसाइट पर विश्व की प्रमुख भाषाओं के साथ साथ हिन्दी भाषा के शब्द कोश, अनुवाद, व्याकरण, समानार्थी व विरोधी शब्दों की जानकारी मिलती हैं।

6 www.bharatdarshan.co.nz

इस वैबसाइट पर हिन्दी साहित्य, लघुकथाएं, व्याकरण आदि सामग्री मिलती है। यह वैबसाइट न्यूज़ीलैंड में बसे मूल भारतीयों द्वारा तैयार की गई है।

7 www.rosettastone.com

इस वैबसाइट पर हिन्दी सहित विश्व की 80 भाषाओं को सीखने की इलैक्ट्रानिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

8 www.unl.ias.anu.edu

टोकियो विश्वविद्यालय द्वारा विनिर्मित इस वैबसाइट पर हिन्दी के अतिरिक्त विश्व की 15 भाषाओं के लिए अनुसंधानात्मक कार्य किया जाता हैं।

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 2
February 2016

9 www.hamarauttaranehal.com

यह साइट हिन्दी व अंग्रेज़ी की द्विभाषिक पोर्टल वैबसाइट है जिसमें दोनों भाषाओं के इतिहास, भूगोल,समाज, अर्थव्यवस्था आदि की अध्ययनगत जानकारियाँ मिलती हैं। यह क्षेत्रीय वैबसाइट होने पर लोकगीतों का भी आनन्द उठाया जा सकता है।

10 www.iiit.net

इन्टरनैशनल इन्स्टीच्यूट आॅफ इन्फोरमेशन टेकनोलाॅजी, हैदराबाद की साइट पर लैंग्वेज़ रिसर्च लेबोरेटरी स्थापित की गई है। इस वैबसाइट पर हिन्दी अंग्रेज़ी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दकोश मुफ्त उपलब्ध हैं।

ये वैबसाइटें हिन्दी भाषा को वैश्विक परिदृश्य में प्रचारित करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। हिन्दी समाचार पत्रों का भाषायी योगदान उल्लेखनीय प्रतीत होता है। इन्टरनैट पर हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या अन्य भाषायी समाचार पत्रों से अधिक है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या व लोकप्रियता हिन्दी भाषी के लिए गौरव का विषय है। वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी समाचार पत्रों की धूम मची हुई है। विदेशों में हिन्दी समाचार पत्रों व पाठकों की संतुलित समीकरण दर्शाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी मांग बढ़ रही है। हिन्दी समाचार पत्रों ने न केवल भाषा का विकल्पन ही उपस्थित नहीं किया बहल्क उसका सुदृढ़ीकरण, मानकीकरण, स्थायीकरण और नियमन भी होता हैं। विभिन्न सर्वेक्षणों के अनुसार हिन्दी समाचार पत्रों की स्थिति आशाप्रद प्रतीत हो रही है क्योंकि इन्टरनैट पर जागरण, पंजाब केसरी, भास्कर, आज, टिब्यून, नई दुनिया, जनवार्ता, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला ,हिन्दुस्तान आदि पत्र उपलब्ध हैं जो हिन्दी भाषा को प्रचारित कर रहे हैं। वर्तमान सन्दर्भ में हिन्दी पत्रिकाएं लोकप्रियता की दृष्टि से प्रथम पंक्ति में खड़ी दिखाई देती हैं। सम्पूर्ण भारत में हिन्दी पत्रिकाएं उत्कृष्ट रूप में प्रकाशित हो रही हैं। हिन्दी में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएं मुख्यतः राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय वैचारिकता की पोषक होती हैं। वर्तमान सन्दर्भ में हिन्दी पत्रिकाओं का अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन भी सामने आने लगा है जोकि शुभ संकेत है।

आकाशवाणी की उपयोगिता निर्विवाद रूप से व्यापक सन्दर्भों को ग्रहण कर चुकी है।ं आकाशवाणी के हिन्दी कार्यक्रमों का प्रसारण वैश्विक स्तर पर होता है। आकाशवाणी के हिन्दी कार्यक्रमों के प्रसारण से हमारे राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरवमयी स्थान प्राप्त हुआ है। आकाशवाणी के हिन्दी कार्यक्रमों द्वारा विविध क्षेत्रों यथा सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक आदि में प्रगति देखने को मिलती है। आकाशवाणी के अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी प्रसारणों की भाषा हिन्दी को जन जन तक पहुंचाने का काम कर रही है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी प्रचार प्रसार की संकल्पना ने जो आयाम आकाशवाणी माध्यम के के हिन्दी कार्यक्रमों से निर्मित हुए हैं उससे विश्व समुदाय को आत्मिक समर्थन प्राप्त हुआ है। दृश्य व

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 2
February 2016

श्रव्य दोनों स्वरूपों की संयुक्त प्रकृति दूरदर्शन अत्यधिक संवेदनशील व विचारणीय हो गया है। दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रमों की लोकप्रियता भारत में तो है ही साथ ही एशियाई महाद्वीप में इसकी लोकप्रियता का सूचकांक निरन्तर शिखर की ओर अग्रसर हो रहा है। दूरदर्शन माध्यम पर चैनलों की उपलब्धता में सर्वाधिक संख्या हिन्दी चैनलों की है जबकि अधिकांश हिन्दी दूरदर्शन चैनलों का स्वामित्व यूरोपीय प्रबन्धकों का है। दूरदर्शन माध्यम के हिन्दी चैनलों से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों द्वारा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी प्रचार प्रसार को लाभ हो रहा है। दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रमों को इन्टरनैट वैबसाइटों पर देखा व सुना जा सकता है।

इन्टरनैट वर्तमान युग का अधुनातन जनसंचार अस्त्र बनकर उभर रहा है। यह माध्यम आकाशवाणी व दूरदर्शन का उत्तम संस्करण है। इस माध्यम पर सूचना व जनसंचार प्रौद्योगिकी का विशाल भंडार उपलब्ध है। इन्टरनैट वैश्विक पहुंच वाला जनसंचार माध्यम है। आज इन्टरनैट माध्यम पर हिन्दी कार्यक्रमों की विशाल ृंखला उपलब्ध है। इन्टरनैट पर आधुनिक सन्दर्भ में कई तकनीकों का विकास हुआ है। इन तकनीकों का सीधा लाभ वैश्विक प्रचार में हिन्दी को हो रहा है। ई-कामर्स इसकी प्रमुख तकनीक है । आज विश्व के औद्योगिक घरानों की दृष्टि एशिया के बाज़ार पर है। एशिया के सन्दर्भ में यदि व्यापार करना है तो भाषा के रूप में हिन्दी को ही प्राथमिकता देनी होगी। ई-कामर्स के माध्यम से खरीददारी करने के लिए हिन्दी भाषा इन्टरनैट पर विशेष महत्व रखती है। भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर तकनीक के क्षेत्र में तीव्रगामी विकास के कारण जटिल से जटिल कम्प्यूटर सम्बन्धी कार्यों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो रहा है।

सार्वभौमिक भाषा विनियोग के संसाधनों के रुप में आकाशवाणी, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, इन्टरनैट, समाचार पत्र-पत्रिकाओं को ले सकते हैं। जनसंचार के इन माध्यमों द्वारा हिन्दी भाषा को सार्वभौमिकता प्राप्त हो रही है। दूरदर्शन पर प्रसारित हिन्दी प्रतियोगात्मक कार्यक्रमों में अन्तर्राष्ट्रीय जनसमुदाय का बढ़ चढ़ कर भाग लेना इस बात का सूचक है कि दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रम सार्वभौमिक भाषा विनियोग में अहम् भूमिका निभा रहे हैं। इन्टरनैट सार्वभौमिक पहुंच रखने वाला जनसंचार संसाधन है। ई-मेल और ई-कामर्स जैसी सुविधाएँ इन्टरनैट पर हिन्दी भाषा में उपलब्ध हो रही हैं। भाषिक सम्प्रेषण शक्ति एकमेव कारण है: हिन्दी भाषा का ध्वनि तंत्र और शब्द सम्पदा। यह भाषा जनचेतना से प्रस्फुटित हुई है। हिन्दी में विश्व व्याप्त विपणन, जनसम्पर्क, लोकप्रशासन, रचनात्मक प्रसारण की अनेक संभावनाएँ सन्निहित हैं। एशियाई सन्दर्भों का संज्ञान हिन्दी भाषा के माध्यम से संभव होने के कारण विश्व भाषिक उपयोगिता बढ़ी है। हिन्दी विज्ञापन की शक्ति को औद्योगिक इकाइयों ने महसूस किया है। इन्टरनैट माध्यम ने हिन्दी को वैश्विक आबादी के घरों तक कम्प्यूटर स्क्रीन पर पहचान बनाने में

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 2
February 2016

उल्लेखनीय कार्य किया है। इन्टरनैट के हिन्दी कार्यक्रमों का लाभ वैश्विक समुदाय अपनी उपयोगिता के सन्दर्भ में ले रहा है। हिन्दी के इन्टरनैट कार्यक्रमों द्वारा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय एक दूसरे के निकट आ गया है। इन सन्दर्भोंे को परखते हुए सिद्ध होता है कि इन्टरनैट माध्यम ने हिन्दी को विश्व पटल पर भाषिक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह प्रभावी रूप से किया है। राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी ने भाषायी विविधताा में एकात्मकता को सच प्रमाणित किया तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र कोश से निकलकर विश्वकोश की ओर अग्रसर हुई। सूचना प्रौद्योगिकी से सर्वाधिक लाभ द्रव्य के स्तर पर बिल गेट्स को हुआ तथा भाषा के स्तर पर हिन्दी को एवम् लिपि के स्तर पर देवनागरी लिपि को हुआ। हिन्दी का स्थान संचार माध्यमों में अंगद के पैर की भांति है। संचार माध्यमों में हिन्दी के बढ़ते कदम भविष्य में वामन के चरणों की तरह प्रमाणित होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थः-

1 जवरीमल पारिख, जनसंचार के सामाजिक सन्दर्भ, अनामिका पब्लिशर्स,नई दिल्ली,1997।
2 विजय कुमार मल्होत्रा, कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998।
3 लक्ष्मी कांत पाण्डेय, संचार माध्यमों में हिन्दी,साहित्य रत्नालय,कानपुर, 2000।
4 हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000।
5 हर्षदेव, उतर आधुनिक मीडिया तकनीक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2001।
6 ओम प्रकाश सिंह, संचार मूल सिद्धान्त, कलासिकल पब्लिशर्स,नई दिल्ली,2002।
7 प्रहलाद शर्मा, इन्टरनैट और पुस्तकालय,ज्योति प्रकाशन, जयपुर,2002।
8 नीलम राठी, जनसंचार परिदृश्य, उत्कर्ष प्रकाशक, नई दिल्ली, 2003।
9 प्रभाकर श्रोत्रिय, हिन्दी कल, आज और कल,किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004।
10 शिवदीन पाण्डेय, विश्व परिप्रेक्ष्य में देवनागरी लिपि,सरस्वती पुस्तक भंडार, अहमदाबाद,प्रथम संस्करण 2006।

Net Sources-
1 www.rajbhasha.com
2 www.rajbhasha.nic.in
3 www.indianlanguages.com
4 www.tdil.mit.gov.in
5 www.dictionary.com
6 www.bharatdarshan.co.nz
7 www.rosettastone.com
8 www.unl.ias.anu.edu
9 www.hamarauttaranehal.com
10 www.iiit.net